माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के आत्मविश्वास : एक अध्ययन

अनिल बाबू*, डॉ0 अराधना सेठी**

शोध सार

प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के आत्मविश्वास का अध्ययन किया गया। इस अध्ययन हेतु मध्यप्रदेश राज्य के मंदसौर जिले के एम.पी.बोर्ड एवं सी.बी.एस.सी बोर्ड के माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के समग्र में से 199 शिक्षकों (97 पुरूष एवं 102 महिला) का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया। आत्मविश्वास मापने हेतु शोधकर्त्ता द्वारा स्वनिर्मित मानकीकृत 'शिक्षक आत्मविश्वास मापनी' का प्रयोग किया गया। इस मापनी में 90 कथन हैं तथा अंकों का विस्तार 90 से 450 तक है। शोधकर्ता द्वारा संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण के सन्दर्भ में माध्य, मानक विचलन, तथा टी परीक्षण का प्रयोग किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना की जाँच की गयी और प्रदत्तों के विश्लेषणोपरान्त यह पाया गया कि माध्यमिक स्तर पर कार्यरत लिंग के आधार पर महिला एवं पुरूष शिक्षकों के आत्मविश्वास में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। विद्यालयीन प्रकार के आधार पर अशासकीय शिक्षकों की अपेक्षा शासकीय शिक्षकों में आत्मविश्वास अधिक पाया गया एवं विद्यालयीन क्षेत्र के आधार पर ग्रामीण शिक्षकों की अपेक्षा शहरी क्षेत्र के शिक्षकों में आत्मविश्वास अधिक पाया गया।

मुख्य शब्द : माध्यमिक स्तर, शिक्षक एवं आत्मविश्वास।

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र की अमूल्य निधि वहाँ की शिक्षा होती है। आज विश्व का प्रत्येक राष्ट्र रक्षा के बाद शिक्षा पर अत्यधिक धन व्यय करता है, क्योंकि शिक्षा राष्ट्र को समृद्ध एवं प्रगतिशील बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा एक ऐसी शक्ति है जो मानव को मानव बनाने में सहायक सिद्ध हुई है। यह नागरिकों पर अपना प्रभाव किसी न किसी मूल्य के रूप में डालती है। यह तभी संभव है, जब देश के प्रत्येक नागरिक को शिक्षित एवं प्रशिक्षित किया जाए। इन नागरिकों को शिक्षित करने का भार योग्य और कुशल शिक्षकों के ऊपर होता है। एक अच्छा शिक्षक वही है जो जीवनभर कुछ न कुछ सीखता रहता है और उसे विद्यार्थी बने रहने में आनंद आता है। शिक्षक का तगमा धारण कर लेने से कोई प्रभावशाली शिक्षक नहीं बन जाता है, उसे बहुत सारी भूमिकाओं का एक साथ निर्वाहन करना पड़ता है, अभिभावक, नेतृत्वकर्ता, पथ निर्देशक, परामर्शदाता, मित्र, सहयोगी जैसी निष्पक्ष व निर्णायक, समालोचक इत्यादि भूमिकाओं का निर्वाहन अपने विद्यार्थियों एवं समाज के लिए करता है। इन भूमिकाओं को अच्छे तरह से निर्वाहन की योग्यता ही शिक्षकों में आत्मविश्वास उत्पन्न करती है। लेकिन आज शिक्षक की भूमिका में कमी देखी जा रही है। 'शिक्षक बनने' और 'शिक्षक होने' में अन्तर होता है। शिक्षक होने में शिक्षकत्व की मौजूदगी का अहसास होता है। शिक्षक होने का अर्थ शिक्षक के गुणों को धारण करना है। जिसे शिक्षकत्व कहा जाता है।(जैन, 2001)[1] इस तरह शिक्षकत्व उन गुणों की ओर संकेत करता है जिसके होने से एक प्रभावी शिक्षक का व्यक्तित्व प्राप्त होता है। यह ऐसा हुनर नहीं है जिसे हर कोई हासिल कर सकता है। इसके लिए शिक्षकत्व के गुणों के साथ–साथ एक महत्वपूर्ण गुण का होना आवश्यक है वह है शिक्षक का आत्मविश्वास।

आत्मविश्वास से आशय 'स्वयं पर विश्वास एवं नियन्त्रण' से है अर्थात् अपनी शक्ति एवं योग्यता पर विश्वास। सामान्य अर्थ में आत्मविश्वास का अर्थ है अपने आप पर विश्वास, अपनी आत्मा पर भरोसा। आत्मविश्वास एक ऐसा आन्तरिक गुण है जो शिक्षण एवं प्रशिक्षण द्वारा विकसित होता है। (जैन, 2015)[2] एक आत्मविश्वास से परिपूर्ण शिक्षक अपने शैक्षणिक क्रियाकलापों में ज्यादा सफल होता है। आत्मविश्वास से परिपूर्ण शिक्षक मानसिक, भावानात्मक पक्ष से परिपक्व होता है, वह आशावादी, विश्वसनीय तथा जीवन में सन्तुष्ट होता है। इतना ही नहीं आत्मविश्वास से परिपूर्ण शिक्षक शैक्षणिक क्षेत्र एवं विद्यार्थियों के जीवन में आने वाली विभिन्न प्रकार की समस्याओं का समाधान आसानी से कर देता है।

इस प्रकार के शिक्षक अपने व्यवसायिक जीवन में ज्यादा सफल होते हैं और प्रत्येक कार्य को निःसंकोच होकर करते हैं। (बघेल एवं पुरकर, 2016)[3]

* शोधार्थी, मंदसौर इंस्टिट्यूट ऑफ एजुकेशन, मंदसौर वि.वि., मंदसौर, (म.प्र.)
* * एसो. प्रोफेसर, मंदसौर इंस्टिट्यूट ऑफ एजुकेशन, मंदसौर वि.वि., मंदसौर, (म.प्र.)

स्वेट मार्डेन का मानना है कि ''आत्मविश्वास का शाब्दिक अर्थ है कि स्वयं में विश्वास। यह विश्वास कि मैं समर्थ हूँ, यह विश्वास कि मैं शक्तिशाली हूँ, यह विश्वास कि मैं कुछ कर सकता हूँ, यही है आत्मविश्वास।'' (Morden, 2009)[4]

जरशील्ड (1997) के शब्दों में आत्मविश्वास से आशय है कि ''यह व्यक्ति के अपने विचारों, भावनाओं, आशाओं, भय, कल्पनाओं तथा अपने मूल्यों के संबंध में उसकी अभिवृत्तियों की ही एक समष्टि है।''(जरशील्ड, 1997)[5]

इमरसन, आर. डब्लू ने आत्मविश्वास को परिभाषित करते हुए लिखा है कि आत्मविश्वास से तात्पर्य ''स्वयं पर विश्वास।'' (जैन, 2015)[6] (इमरसन, आर.डब्लू., उद्धरत जैन 2015)

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कह सकते हैं कि किसी भी कार्य की सफलता का प्रबल द्योतक है शिक्षक का आत्मविश्वास, जो शिक्षक की आन्तरिक शक्ति है। आज किसी भी कार्य को करने के लिये आत्मविश्वास को नींव का पत्थर माना जा सकता है। आत्मविश्वास से परिपूर्ण शिक्षक अपने विद्यार्थियों की भावी सफलता का द्योतक है। जिन शिक्षकों में आत्मविश्वास होता है वह नयी–नयी विधियों एवं तकनीकी से शिक्षण करने का जोखिम उठाते हैं। किसी भी शिक्षक में आत्मविश्वास मनोवैज्ञानिक दृष्टि से शिक्षक के शिक्षण की सफलता का वह पायदान है जिस पर वह अपनी सभी प्रकार की समस्याओं को शैक्षिक चुनौती के रूप में स्वीकार करता है और बिना किसी भय के साथ समस्या पर सफलता के लिए व्यूह रचना तैयार करता है और भविष्य में आने वाली समस्याओं के हल के लिए निरन्तर तैयार रहता है। (रोखयाति, 2015)[7]

संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण – संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण का अध्ययन करने के पश्चात् आत्मविश्वास से संबंधित निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं।

मलिक, उपेन्द्र एवं योगेश (2016) ने 'ए स्टडी ऑफ इफेक्ट ऑफ सेल्फ कॉफिडेन्स ऑन अकेडमिक एचीवमेंट अंमग सीनियर सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेंट' शोध कार्य किया। प्रस्तुत अध्ययन में यादृच्छिक विधि से कक्षा 11वीं के 200 छात्रों का चयन न्यादर्श हेतु किया। आत्मविश्वास मापन के लिए डॉ. रेखा अग्निहोत्री द्वारा निर्मित आत्मविश्वास मापनी का उपयोग किया गया। एकत्रित प्रदत्तों के विश्लेषण के परिणामों से स्पष्ट हुआ कि– उच्च एवं निम्न आत्मविश्वास वाले 11वीं कक्षा के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है। उच्च एवं निम्न आत्मविश्वास वाले 11वीं कक्षा के लड़कों की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। उच्च एवं निम्न आत्मविश्वास वाले 11वीं कक्षा के लड़कियों की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सिंगला, रूचि (2015) ने 'ए स्टडी ऑफ इमोशनल कम्पेटेंसी ऑफ टीचर एजुकेटर्स इन रिलेशन टू देयर सेल्फ कॉन्फीडेन्स, एडजस्टमेंट एण्ड लाइफ सटिस्फैक्शन' शीर्षक शोधकार्य किया। प्रस्तुत अध्ययन में साधारण यादृच्छिक न्यादर्शन विधि के द्वारा हरियाणा राज्य से 300 शिक्षक शिक्षकों का चयन किया। डॉ. रेखा गुप्ता द्वारा निर्मित आत्मविश्वास मापनी का प्रयोग किया गया। संकलित प्रदत्तों के अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि– महिला एवं पुरूष शिक्षक शिक्षकों के आत्मविश्वास के बीच सार्थक अन्तर था। पुरूष शिक्षक अपने समकक्षों की तुलना में अधिक आत्मविश्वासी थे। ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर पाया गया। ग्रामीण कॉलेज शिक्षकों की तुलना में शहरी कॉलेज शिक्षकों का आत्मविश्वास कम था। वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित कॉलेज शिक्षक शिक्षकों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर पाया गया। स्ववित्तपोषित कॉलेज शिक्षकों की तुलना में वित्तपोषित कॉलेज शिक्षकों का आत्मविश्वास कम था। 3 साल के कम एवं 3 साल के ज्यादा शिक्षण अनुभव रखने वाले शिक्षकों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर पाया गया। 3 साल से अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों की तुलना में 3 साल से कम शिक्षण अनुभव वाले शिक्षक का आत्मविश्वास अधिक पाया गया।

शुक्ला, दीपक (2016) ने 'बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर शोधकार्य किया। न्यादर्श के रूप में इन्होंने ग्वालियर शहर के दो अशासकीय शिक्षा महाविद्यालय से 100 प्रशिक्षणार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया। प्रदत्तों के संकलन हेतु डॉ. रेखा गुप्ता द्वारा निर्मित आत्मविश्वास मापनी का प्रयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय विधियों के रूप में मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी–परीक्षण को प्रयोग किया। अध्ययन के परिणाम स्वरूप पाया कि– महिला प्रशिक्षणार्थी एवं पुरूष प्रशिक्षणार्थी के आत्मविश्वास के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

सिंह, प्रतिमा (2014) ने 'वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों में समायोजन, जीवन सन्तुष्टि एवं आत्मविश्वास की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन' शीर्षक पर शोधकार्य किया। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में उ.प्र. के वाराणसी मण्डल में वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों से 600 शिक्षकों (370 शहरी एवं 230 ग्रामीण शिक्षकों) का चयन यादृच्छिक विधि से किया। आत्मविश्वास मापन के लिए रेखा अग्निहोत्री द्वारा निर्मित आत्मविश्वास मापनी का प्रयोग किया। सांख्यिकीय विधियों में मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु किया गया। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि–वित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के

शिक्षक अधिक आत्मविश्वासी हैं। वित्तपोषित महाविद्यालयों के सामान्य वर्ग के शिक्षक, स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के सामान्य वर्ग के शिक्षकों की अपेक्षाकृत अधिक आत्मविश्वासी वाले हैं। स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के पिछड़े वर्ग के शिक्षकों की अपेक्षा सामान्य वर्ग के शिक्षक अधिक आत्मविश्वासी थे। वित्तपोषित महाविद्यालयों की महिला शिक्षक, अपेक्षाकृत स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों की महिला शिक्षकों से अधिक आत्मविश्वास वाली हैं। वित्तपोषित महाविद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की आत्मविश्वास में समानता है। स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों के आत्मविश्वास में समानता पायी।

अग्निहोत्री, कल्पना एवं अटल बिहारी (2012) ने ''प्राथमिक स्तर पर अध्यापनरत् शासकीय एवं अशासकीय स्कूल के शिक्षक–शिक्षिकाओं के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन'' शीर्षक पर शोध कार्य किया। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में उ.प्र. राज्य के जनपद इटावा के प्राथमिक स्तर पर अध्यापनरत् शासकीय एवं अशासकीय स्कूल के 120 शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का चयन यादृच्छिक विधि से किया। प्रदत्तों के संकलन के लिए रेखा अग्निहोत्री द्वारा निर्मित आत्मविश्वास इन्वेण्ट्री का प्रयोग किया गया। एकत्रित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय विधियों के रूप में मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी परीक्षण का प्रयोग किया। अध्ययन के परिणाम स्वरूप पाया गया कि– शासकीय एवं अशासकीय स्कूल में कार्यरत शिक्षकों के आत्मविश्वास के विभिन्न स्तरों पर सांख्यकीय दृष्टि से कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। शासकीय एवं अशासकीय स्कूल में कार्यरत शिक्षिकाओं के आत्मविश्वास के विभिन्न स्तरों पर सांख्यकीय दृष्टि से कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

अध्ययन की आवश्यकता – एक शिक्षक का शिक्षण की अन्तः क्रिया में महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा जगत में शिक्षक की भूमिका विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, सांवेगिक एवं सामाजिक विकास हेतु महत्वपूर्ण मानी जाती है। छात्रों का यह महत्वपूर्ण विकास शिक्षकों की भूमिका एवं उनके द्वारा शिक्षण क्रियाओं पर निर्भर करता है, जो वे अपने शिक्षण के दौरान करते हैं। लेकिन वर्तमान परिवेश में शिक्षकों की इन भूमिकाओं में कमी देखी जा रही है, जिससे शिक्षण का स्तर दिनों–दिन गिरता जा रहा है। इसके अतिरिक्त यह भी दृष्टिगोचर होता है कि शिक्षण के दौरान शिक्षक में आत्मविश्वास में कमी दिखाई देती है। इसी आत्मविश्वास की कमी के कारण विद्यालय में अनुशासनहीनता, छात्र अशान्ति जैसी अनेक समस्यायें उत्पन्न हो रही हैं। और यह समस्याएँ माध्यमिक स्तर पर अधिक दृष्टिगत होती हैं। माध्यमिक स्तर पर शिक्षक एक पथ प्रदर्शक, मित्र, निर्देशक और अनुदेशक की भूमिका निभाता है। लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि माध्यमिक स्तर पर कार्यरत अधिकांश शिक्षकगण छात्रों को उचित दिशा निर्देश प्रदान नहीं कर पा रहे हैं। अब प्रश्न उठता है कि ''क्या माध्यमिक स्तर में पढ़ाने वाले शिक्षक छात्रों को यथोचित शिक्षा के अवसर प्रदान करने में अक्षम हैं?'' क्या माध्यमिक स्तर पर कार्यरत महिला एवं पुरूष, शासकीय एवं अशासकीय, ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों के आत्मविश्वास में अन्तर है? इन सभी कारणों के पीछे क्या वर्तमान शिक्षक के आत्मविश्वास में कमी दिखाई पड़ती है। इन सभी प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के लिए शोधकर्ता ने उपरोक्त प्रकरण पर शोधकार्य करने का निश्चय किया।

अध्ययन के उद्देश्य – वर्तमान शोध के परिप्रेक्ष्य में जिन उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयास किया गया है, वे निम्नलिखित हैं :

1. माध्यमिक स्तर पर कार्यरत महिला तथा पुरूष शिक्षकों के आत्मविश्वास का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के आत्मविश्वास का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के शहरी तथा ग्रामीण विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के आत्मविश्वास का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना – प्रस्तुत शोध अध्ययन के निमित्त निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने के सन्दर्भ में निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया :

1. माध्यमिक स्तर पर कार्यरत महिला तथा पुरूष शिक्षकों के आत्मविश्वास में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के आत्मविश्वास में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर के शहरी तथा ग्रामीण विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के आत्मविश्वास में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन में प्रयुक्त तकनीकी शब्द – शोधकर्ता द्वारा संबंधित साहित्य का अध्ययन करने के उपरान्त मुख्य शब्दों को संक्रियात्मक रूप से परिभाषित किया गया–

आत्मविश्वास : आत्मविश्वास से तात्पर्य स्वयं पर विश्वास एवं स्वयं नियन्त्रण अर्थात् अपनी शक्ति एवं योग्यता पर विश्वास।

माध्यमिक स्तर के शिक्षक : प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर के शिक्षकों से अभिप्राय वे शिक्षक जो कक्षा 9वीं एवं 10वीं स्तर के छात्र–छात्राओं को शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में पढ़ाते हैं।

विद्यालय प्रकार : प्रस्तुत शोध में विद्यालय प्रकार से आशय शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों से है। वे विद्यालय जो शासकीय प्राधिकरण द्वारा संचालित किये जाते हैं शासकीय विद्यालय कहलाते हैं और दूसरे प्रकार के विद्यालय जो व्यक्तिगत समूह द्वारा संचालित किये जाते हैं अशासकीय विद्यालय कहलाते हैं। इस अध्ययन में शासकीय विद्यालय से तात्पर्य वे माध्यमिक विद्यालय जो केन्द्र सरकार, राज्य सरकार द्वारा संचालित किये जाते हैं एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालय से तात्पर्य ऐसे विद्यालय जिन्हें न तो सरकार द्वारा किसी प्रकार की वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है और जो किसी व्यक्ति द्वारा संचालित किये जाते हैं।

विद्यालय क्षेत्र : प्रस्तुत अध्ययन में विद्यालय क्षेत्र से आशय शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों से है। जो शासकीय एवं अशासकीय संस्थाओं द्वारा संचालित किये जाते हैं।

विद्यालयी बोर्ड : विद्यालयी बोर्ड से तात्पर्य मध्य प्रदेश बोर्ड एवं सी.बी.एस.सी. बोर्ड से है।

शोध विधि : प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन के चर
स्वतन्त्र चर– लिंग, विद्यालय प्रकार, विद्यालयीन क्षेत्र।
परतन्त्र चर– आत्मविश्वास।

अध्ययन के स्त्रोत

अध्ययन के स्त्रोत मध्यप्रदेश राज्य के मंदसौर जिले के मध्य प्रदेश बोर्ड एवं सी.बी.एस.सी. बोर्ड में पढ़ाने वाले माध्यमिक स्तर के शिक्षक हैं।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोधकार्य में जनसंख्या के रूप में मंदसौर जिले माध्यमिक स्तर के शिक्षकों का चयन यादृच्छिक न्यादशर्न विधि द्वारा किया गया। जिसमें दो प्रकार के विद्यालय एम.पी.बोर्ड एवं सी.बी.एस.सी. बोर्ड के कुल 199 शिक्षक (97 पुरूष और 102 महिला) को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया।

उपकरण

प्रस्तुत शोध में शिक्षक के आत्मविश्वास मापन के लिए शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित मानकीकृत 'शिक्षक आत्मविश्वास मापनी' का प्रयोग किया गया। इस मापनी में 90 कथन है, अकों का विस्तार 90 से 450 तक हैं। इस मापनी की विश्वसनीयता +0.958 प्राप्त हुई। शोधकर्ता द्वारा शिक्षक आत्मविश्वास मापनी को पांच आयामों में वर्गीकृत किया गया। (TSCS, Sethi, Aradhana & Babu, Anil,2019)[11]

1. शिक्षण आत्मविश्वास
2. व्यक्तित्व आत्मविश्वास
3. सामाजिक आत्मविश्वास
4. मंच आत्मविश्वास
5. प्रौद्योगिकीय आत्मविश्वास

सांख्यिकीय प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन में सांख्यकीय प्रविधि के रूप में माध्य, प्रमाप विचलन व टी–परीक्षण प्रयोग किया गया। (कपिल,1981)[12]

प्रदत्तों का विश्लेषण तथा परिणाम

प्रदत्तों का संकलन करने के पश्चात् निर्धारित उद्देश्यानुसार प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या की गई। उद्देश्यों के आधार पर निम्नलिखित परिणाम निकल कर आये हैं :

1.1 लिंग के आधार पर शिक्षकों के आत्मविश्वास का मध्यमान, मानक विचलन, टी मूल्य को दर्शाती तालिका।

लिंग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	df	तालिका मान (Table value)	टी मूल्य ('t' value)	सार्थकता का स्तर
महिला	102	376.36	39.72	197	1.97 (.05 स्तर)	.004	सार्थक अन्तर नहीं है .05 स्तर पर
पुरूष	97	376.34	35.87				

विश्लेषण– सारणी क्रमांक–1.1 में प्रदर्शित आकड़ों द्वारा स्पष्ट है कि महिला एवं पुरुष शिक्षकों के आत्मविश्वास का मध्यमान क्रमशः 376.36 व 376.34 तथा मानक विचलन क्रमशः 39.72 व 35.87 है। जिनका टी–मूल्य .004 है जो कि df= 197 के .05 सार्थकता स्तर पर 1.97 से कम है। प्रदर्शित प्रदत्तों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर महिला एवं पुरूष शिक्षकों के आत्मविश्वास के माध्य फलांकों में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना "माध्यमिक स्तर पर कार्यरत् महिला एवं पुरूष शिक्षकों के आत्मविश्वास में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" को स्वीकार किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर पर कार्यरत् लिंग के आधार पर शिक्षकों के आत्मविश्वास में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष की पुष्टि अनुपम शर्मा(2011)[14], कल्पना अग्निहोत्री एवं अटल बिहारी(2012)[15], मोहन एम. रडेडी(2014)[16] एवं रूचि सिंगला(2015)[17] के अध्ययन निष्कर्षों से होती है।

1.2 विद्यालय प्रकार के आधार पर शिक्षकों के आत्मविश्वास का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी मूल्य को दर्शाती तालिका।

विद्यालय प्रकार	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	df	तालिका मान (Table value)	टी मूल्य ('t' value)	सार्थकता का स्तर
शासकीय	97	387.29	37.68	197	1.97 (.05 स्तर)	3.78	सार्थक अन्तर है 0.05 स्तर पर
अशासकीय	102	367.78	35.13				

विश्लेषण– सारणी क्रमांक–2 में प्रदर्शित आकड़ों द्वारा स्पष्ट है कि शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों के आत्मविश्वास का मध्यमान क्रमशः 387.29 व 367.78 एवं मानक विचलन क्रमशः 37.68 व 35.13 है। जिनका टी–मूल्य 3.78 है जो कि df= 197 के .05 सार्थकता स्तर पर 1.97 से अधिक है। प्रदर्शित प्रदत्तों के विष्लेषण से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों के आत्मविश्वास के माध्य फलांकों में सार्थक अन्तर है। अतः शून्य परिकल्पना "माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों के आत्मविश्वास में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" को अस्वीकार किया जाता है। प्रदत्तों के विष्लेषण से स्पष्ट है कि अशासकीय शिक्षकों की अपक्षा शासकीय शिक्षकों का आत्मविश्वास अधिक है। प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष की पुष्टि प्रतिमा सिंह[18], रूचि सिंगला[19] एवं सुलक्षणा अजाब्राओं भुयार[20] के अध्ययन निष्कर्षों से होती है।

1.3 विद्यालय क्षेत्र के आधार पर शिक्षकों के आत्मविश्वास के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी मूल्य को दर्शाती तालिका।

विद्यालय क्षेत्र	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	df	तालिका मान (Table value)	टी मूल्य ('t' value)	सार्थकता का स्तर
शहरी	94	388.72	33.27	197	1.97 (.05 स्तर)	4.31	सार्थक अन्तर है 0.05 स्तर पर
ग्रामीण	105	366.40	38.98				

विष्लेषण– सारणी नं.–3 में प्रदर्शित आकड़ों द्वारा स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों के आत्मविश्वास का मध्यमान क्रमशः 388.72 व 366.40 एवं मानक विचलन क्रमशः 33.27 व 38.98 है। जिनका टी–मूल्य 4.31 है जो कि df= 197 के .05 सार्थकता स्तर पर 1.97 से अधिक है। प्रदर्शित प्रदत्तों के विष्लेषण से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों के आत्मविश्वास के माध्य फलांकों में सार्थक अन्तर है। अतः शून्य परिकल्पना "माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों के आत्मविश्वास में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" को अस्वीकार किया जाता है। प्रदर्शित आकड़ों के विष्लेषण से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण शिक्षकों की अपेक्षा शहरी शिक्षकों का आत्मविश्वास अधिक है। प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष की पुष्टि अनुपम शर्मा[21] एवं रूचि सिंगला[22] के अध्ययन निष्कर्ष से होती है।

शोध निष्कर्ष

माध्यमिक स्तर पर महिला और पुरुष शिक्षकों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नहीं है। जिसका सम्भवतः कारण यह हो सकता है कि आत्मविश्वास का लिंग पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, क्योंकि आज सभी शिक्षकों को एक साथ शिक्षक प्रशिक्षण प्रदान कर व्यवसायिक कौशल को विकसित किया जाता है एवं दोनों ही वर्गों के शिक्षकों को समाज द्वारा समान सामाजिक सम्मान एवं महत्व दिया जाता है। जिस कारण आत्मविश्वास पर उनके लिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। 21वीं शताब्दी की चाहे वह शिक्षिका हो या शिक्षक दोनों ही अपने उत्तरदायित्व का निर्वाहन अच्छे ढंग से करते हैं, जिसका प्रभाव उनके आत्मविश्वास पर पड़ता है। यही कारण है कि महिला और पुरुष शिक्षकों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर पाया गया। अर्थात अशासकीय शिक्षकों की अपेक्षा शासकीय शिक्षकों का आत्मविश्वास अधिक है। जिसका सम्भवतः कारण यह हो सकता है कि वर्तमान समय में सरकार द्वारा समय–समय पर शासकीय शिक्षकों के लिए अनेक प्रकार के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम, टीचर डेवलपमेंट प्रोग्राम का आयोजन किया जाता है। इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों में विषय ज्ञान के साथ–साथ नई–नई तकनीकी एवं आधुनिक शिक्षण विधियों का प्रशिक्षण दिया जाता है। इस प्रकार के प्रशिक्षण प्राप्त कर शिक्षकों का कक्षा शिक्षण के समय आत्मविश्वास खुद व खुद बढ़ जाता है। यही कारण है कि अशासकीय शिक्षकों की अपेक्षा शासकीय शिक्षकों का आत्मविश्वास स्तर उच्च होता है।

माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर है। अर्थात ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत शिक्षकों की अपेक्षा शहरी क्षेत्र में कार्यरत शिक्षकों का आत्मविश्वास अधिक है। इसका सम्भवता यह कारण हो सकता है कि आज शहरी क्षेत्र के विद्यालय आधुनिक तकनीकी से युक्त स्मार्ट क्लासेस एवं आधुनिक एवं भौतिक संसाधनों के कारण विद्यार्थियों एवं शिक्षण से संबंधित समस्याएँ हल करने में शिक्षकों को सहायता मिलती है। शहरी क्षेत्र के शिक्षक नई तकनीकी के साथ समय–समय पर स्वयं को अद्यतन (Update) रखते हैं, जो शहरी क्षेत्र के शिक्षकों में आत्मविश्वास वृद्धि का सबसे बड़ा कारक है। दूसरा कारण यह भी है कि शहरी क्षेत्र के शिक्षक परम्परागत शिक्षण विधि की अपेक्षा नवीन एवं आधुनिक शिक्षण विधियों के माध्यम से शिक्षण कार्य करना ज्यादा पसंद करते हैं, जिससे उनके आत्मविश्वास में उत्तरोत्तर वृद्धि होती रहती है। उपरोक्त सभी कारण इस बात के द्योतक हैं कि ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की अपेक्षा शहरी क्षेत्र के शिक्षकों में उच्च

आत्मविश्वास पाया जाता है।

शोध का परिसीमन

1. प्रस्तुत शोध मध्यप्रदेश के मंदसौर जिले में किया गया।
2. प्रस्तुत शोध में केवल एम.पी. बोर्ड एवं सी.बी.एस.ई. बोर्ड में पढ़ाने वाले शिक्षकों को ही सम्मिलित किया गया है।
3. प्रस्तुत शोध में नवोदय विद्यालय एवं सैनिक स्कूल में पढ़ाने वाले शिक्षकों को सम्मिलित नहीं किया गया।

संदर्भ

1. जैन,अभय कुमार, 'सफलता प्राप्त करने के सूत्र', कादम्बिनी, हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन, 2001,पृ.सं. 34.
2. जैन, पायल भोला ,स्वयं की पहचान, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, 2015, पृ.स.113.
3. बघेल, राधेश्याम, एवं पुरकर, शोभा ,शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रभाव का अध्ययन. परिप्रेक्ष्य शैक्षिक योजना और प्रशासन का सामाजिक–आर्थिक संदर्भ, वर्ष 33 अंक 1, 2016, पृ.स. 41–52, Retrieved from http://www.nuepa.org
4. Morden, orison sweet 'self confidence', Sahni Publication, Delhi, 2009.
5. जरशील्ड, ए.टी. 'किशोर मनोविज्ञान' ,विहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 1997.पृ.स. 186.
6. रोखयाति, उमि 'इगलिश टीचर्स प्रोफेशनल डिवलपमेंट एण्ड सेल्फ कॉन्फिडेन्स इन परफार्मिंग देयर प्रोफेशन', International Journal on Studies in English Language and Literature (IJSELL) Volume 3, Issue 2, 2015] PP 78-82, Retrieved from https://www.arcjournals.org
7. मलिक, उपेन्द्र एवं योगेश 'ए स्टडी ऑफ इफेक्ट ऑफ सेल्फ कॉफिडेन्स ऑन अकेडमिक एचीवमेंट अंमग सीनियर सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेंट', Indian Journal Of Research, Vol. 3, Issue 12, 2016, P- 64-67, Retrieved from http://www.worldwidejournals.com
8. सिंगला, रूचि 'ए स्टडी ऑफ इमोशन कम्पेटेंसी ऑफ टीचर एजुकेटर्स इन रिलेशन टू देयर सेल्फ कॉन्फीडेन्स, एडजस्टमेंट एण्ड लाइफ सटिस्फैक्शनए महर्शि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, 2015.
9. शुक्ला, दीपक 'बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन' शिक्षामित्र, खण्ड.8, अंक1 ,2016 पृ. स. 15–16, http://www.shikshamitra.com
10. सिंह, प्रतिमा (2014) वित्तपोशित एवं स्ववित्तपोशित महाविद्यालयों के शिक्षकों में समायोजन, जीवन सन्तुष्टि एवं आत्मविश्वास की स्थित का तुलनात्मक अध्ययन पी–एच.डी.,वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, (उ.प्र.)
11. अग्निहोत्री, कल्पना एवं अटल बिहारी (2012) प्राथमिक स्तर पर अध्यापनरत् सरकारी एवं गैर सरकारी स्कूल के शिक्षक–शिक्षिकाओं के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन, Journal of educational & Psychological Research, Vol.2, No.2 P.157-160, Retrieved from http://ijepr.org/
12. Sethi, Aradhana & Anil Babu Mamual for Teacher's self confidence scale, Agra, National psychological corporation, 2019.
13. कपिल एच. के.'अनुसंधान विधियां', हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन, आगरा,1981,पृ.स.181.